

पहचाने मन की अद्भुत शक्ति को

मन, मन की बातें बड़ी अनूठी हैं, कोई समझे या ना समझे। सबकुछ यहीं से ही होता है। लेकिन देखा पहले जाता, सोचा बाद में जाता। यह प्रक्रिया बहुत लम्बी होती है, बस होती जाती है, लेकिन पता बाद में चलता है कि अरे! यह कैसे हो गया। उसमें से एक चीज़ है माफ़ी देना और लेना, आज हम इसी पर चर्चा करेंगे।

इसमें हो क्या रहा है? हम बस कहते रहते हैं गलती हमारी नहीं है, यही ना! इसका तो सीधा मतलब है कि किसी और की है। यही बात दूसरी तरफ से भी हो रही है। दुनिया का मनोवैज्ञानिक अपराध, सबसे बड़ा अपराध यही होता है कि जब हम कुछ नहीं करते या नहीं किया होता है तो उसे कहने की जरूरत ही क्या है? आप मत कहो, आप चुप रहो, लेकिन हमारी स्थिति है न मानना, अर्थात् सब आकर बोलें कि नहीं-नहीं आप बिल्कुल निर्दोष हैं। इसे कहते हैं सूक्ष्म अहम्। और



तरह से अगर हम किसी के गुणों को देखेंगे तो उनके गुण भी हमारे होते जायेंगे। तो क्यों न हम गुणों को ही देखें? आप प्रैक्टिकल करके देखें, किसी के भी गुणों को देखो तो कितनी खुशी होती है, मन कितना हल्का रहता है और वहीं पर अगर हम थोड़ा समय भी अवगुणों की चर्चा कर लें तो माहौल भारी सा हो जाता है, लेकिन पता नहीं चलता। यहाँ हमारा अनुभव यही कहता है कि चर्चा करके हम खुश तो हो जाते हैं लेकिन इसमें नुकसान तो हमारा ही होता है। तो क्यों न हम अपने आप को माफ करें ताकि अपने आपको जगह देकर खुशी को या शांति को परमानेंट जगह दें। माफ करना ही खुद को स्वीकार करना है कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं आपकी तरह का हूँ अर्थात् मूल रूप में उन बातों के लिए जगह ही न हो, जो हमारे अन्दर हलचल पैदा कर देते हैं। ये बड़ा ही सहज इलाज है, लेकिन सवाल ये है कि करेगा कौन? और सोचेगा कौन?

यही टकराव रिश्ते में भी होता है, कोई किसी को भी माफ नहीं करते हैं, दोषी ठहराते रहते हैं, जीवन उदास होता ही जाता है। एक-दूसरे को माफ न करना अर्थात् मन में उस बात को जगह देना, ना कि खुद से प्रेम करना। हम जब भी किसी को भी जगह देते हैं तो उसके बारे में चिन्तन चलता है ना! उसके अवगुण को जितनी बार हम सोचेंगे, उतनी बार वह अवगुण हमारा होता जायेगा और ठीक इसी

बहुत सहज है, बस हमें उन बातों, लोगों या परिस्थितियों को अपने अन्दर जगह न देकर अपने आप को जगह देनी पड़ेगी। ये इतना कठिन नहीं है, बहुत ही सरल है, करना। लेकिन उसके लिए पहल करना कि यह तो मैं ज़रूर करूंगा, यह मुश्किल सा लगता है, लेकिन यदि कर लिया ना, तो समझो जीवन सुधर गया। इस शान्ति को पहचान कर क्यों ना हम प्रयोग करें...

आप देखिये... जब भी आपसे कोई गलती होती है तो आप सर्वप्रथम उसको दूसरे पर थोपते हैं और उसका असहज या फिर सहज कारण बताते हैं। कारण बताकर भी हम छूट नहीं जाते क्योंकि घटना तो घट चुकी होती है, उस समय जब आप दोनों की बातें होती हैं तो उस समय कोई तीसरा तो मौजूद नहीं होता विटनेस या गवाह के रूप में, जो हमें बता सके कि सही और गलत क्या है। सभी की ज़िंदगी में यह सारे दौर चलते हैं और चलते रहेंगे। आप ज़रा ध्यान से देखो,

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-9 (2017-2018)

1					2		3	4
				5				
6		7	8					
		9			10			11
		12			13	14		
15			16	17		18	19	
			20				21	22
23			24			25		
		26						
27					28			29

बनें विजेता : पहली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. ज्ञान की बुलबुल बन....करते रहना है (3-3)
2. जिसका ज़मीन से कोई रिश्ता न हो (3)
3. स्वर्ग के बाद सभी देवताएं.... में चले जाते हैं, गिरती कला (4)
4. विष्णु द्वारा.... (3)
5. राइट है, विष्णु द्वारा.... (3)
6. बूंद-बूंद करने परनी गिरना (4)
7. नखरा, ठसक, गर्व (2)
8. एक मुझे,बाप को याद

9. करना है (4)
10. गीला, आर्द्र (2)
11. बच्चे तो....होते हैं, महान आत्मा, सन्यासी (3)
12. सीता, राम की पत्नी का एक नाम (3)
13. दुर्बल, ताकतहीन, लाचार (4)
14. माया ने तुम बच्चों को.... किया है बाप आकर फिर से सुरजीत करते हैं (3)
15. झरोखे से देखना, झुककर देखना (3)
16. थोड़ा, अल्प (2)

बायें से दायें

1. घड़ी की मुआफिक यह...चलता ही रहता है (4)
2. कलियुग का फ्रूट, औषधि (2)
3. शरीर से सम्बन्धित, दैहिक (4)
4. लूटना और मारना, लूटमार (4)
5. पकड़ना, फुर्ती से बढ़कर उठाना (4)
6. रास्ता, राह (2)
7. नासिका, नथना, नासा, इज्जत (2)
8. लोग, जनता (2)
9. नमक, आपस में....पानी नहीं होना है (2)
10.मान-शान से उपराम रहना है (2)

11. मसखरी, हँसी (3)
12. यह....और जीत का खेल है, पराजित (2)
13. शास्त्रों में ज्ञान आटे में....मिसल है (3)
14. अज्ञानी, नासमझ (2)
15. आ से....प से परमात्मा (2)
16. सुखद अवलोकन, संक्षिप्त दर्शन, मनोहर दृश्य (2)
17. वाद-विवाद, झगड़ा (4)
18. अपना...खराब नहीं करना है, भोजन (2)
19. निचोड़, निष्कर्ष (2)
20. - ब.कु. राजेश, शांतिवन।



डेरा बस्सी-पंजाब। श्री अर्जुनदास सर्वहितकारी सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल डॉ. देवव्रत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राजबाला बहन तथा ब्र.कु. रविन्द्र भाई।



फतेहाबाद-हरियाणा। 'जिला स्तरीय गीता महोत्सव-2017' के अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. सीता को सम्मानित करते हुए उपयुक्त डॉ. हरदीप सिंह तथा अन्य।



सुंदरबनी-जम्मू कश्मीर। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् विधायक रविन्दर रेणा के साथ ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य गणमान्य लोग।



फिरोज़पुर-झारका। महामण्डलेश्वर धर्मदासजी महाराज को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा तथा ब्र.कु. रेखा।



समस्तीपुर-बिहार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए बिहार इंडस्ट्रीज़ के पूर्व उपाध्यक्ष रामगोपाल सुरेका। साथ हैं ए.डी.एम. संजय कुमार उपाध्यय तथा अन्य।



वयाणा-राज। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष मोना दिनेश, भारतीय किसान महासंघ के जिला उपाध्यक्ष नारायण सिंह धाकण, कृषि अधिकारी सुरेश गुप्ता, भारतीय किसान संघ के तहसील अध्यक्ष सुबुद्धि सिंह कारबारी, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. बबिता तथा अन्य।